LANA

Haloxylon salicornicum (Family Chenopodiaceae) locally known as Lana is an important multi-branched shrub of Thar Desert. In western Rajasthan, it is distributed in the districts of Bikaner, Jaisalmer and Srigangangar. It is also found in Israel, Jordan, Egypt, Saudi Arabia, Kuwait, Oman, United Arab Emirates, Afghanistan and Pakistan. Extremely reduced leaves, thick cuticle, sunken stomata, deep and extensive root system are the important adaptive characters of the species which make it to survive under water-limiting environment. There is a local proverb about Lana expressing its distribution in the area:

"Etta Tota, beech Bardana, Chhaman, Seetu Diggu Rono Bhadariya ro sukho chhano Askand ra leela lana Nachane ro Kot Bakhano"

Economic Importance

It's seeds are edible and mixed with seeds of pearl millet, Sewan grass (*Lasiurus sindicus*), Murath grass (*Panicum turgidum*), and the flour is used for making *chapatis*. Canopy of "Lana" provides excellent site for production of edible mushroom locally known as "Khumbi". These grow profusely under the canopy of Lana during rainy season (July-September) and people collect it for their own consumption and also sale in local market.

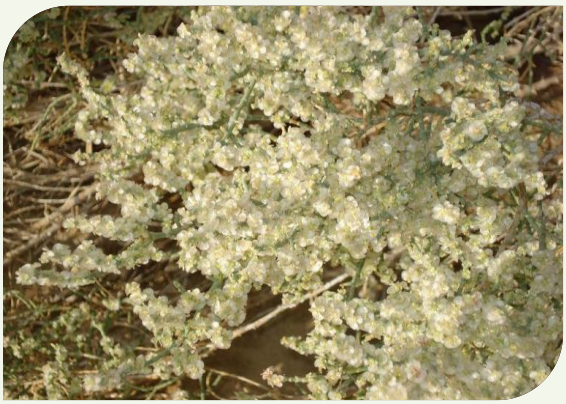

It is being an important feed resource, particularly well known for camel. It's fruiting tops (locally known as *Fuli*) are nutritious feed and contains 14-19% protein.

The ash of the plant is used by desert inhabitants in skin diseases. The seeds are also used by the traditional practitioners as a herbal medicine.

Dried branches are traditionally used as fuel wood and supposed to give less smoke.

Ecological Importance and Conservation

Its multi-branched habit, wide canopy and deep root system make it an ideal woody perennial species to survive in harsh arid environment and to protect the soil cover. There is need to conserve the natural areas of Lana particularly in Jaisalmer district.

ENVIS Centre on Combating Desertification
ICAR-Central Arid Zone Research Institute, Jodhpur - 342003

लाणा

लाणा का वानस्पतिक नाम हेलोक्सिलोन सेलीकार्निकम है, यह एक बहुशाखीय छोटी झाड़ी है। भारतवर्ष में यह पश्चिमी राजस्थान के बीकानेर, श्रीगंगानगर एंव जैसलमेर जिले में प्राकृतिक रूप से मिलती है। लाणा के विषय में प्रचलित लोकोक्ति से इसके विस्तार की जानकारी मिलती है

"एटा टोटा, बीच बरडाणा, छामण, सीतु दिग्गु रोणो
भादरिया रो सुखो छाणों आसकंद रा लीला लाणा
नाचणे रो कोट बखाणों"

आर्थिक महत्व

पश्चिमी राजस्थान में जहाँ लाणा प्रचुर मात्रा में उपलब्ध रहा है इसके बीजों को बाजरे व अन्य के साथ मिलाकर रोटी व ढोकली बनाते हैं। लाणा के नीचे उगने वाली प्राकृतिक खुम्बी अत्यधिक स्वादिष्ट एंव गुणवत्ता से भरपूर होती है। ग्रामीण जन इसे इकट्ठा करके स्वयं प्रयोग में तो लेते ही हैं साथ ही स्थानीय बाजार में बेचकर अतिरिक्त आय भी अर्जित करते हैं।

ऊँट के चारे के लिए लाणा की विशेष रूप से पहचान रही है। प्रायः चारे के लिए इसकी फूली को दूसरे चारों के साथ उपयोग में लिया जाता है। इसकी फूली में प्रोटीन की मात्रा 14.0 से 19.0 प्रतिशत तक होती है।

स्थानीय लोग इसकी राख का उपयोग चर्म रोग निवारण हेतु करते हैं। पारम्परिक चिकित्सक इसके बीजों का उनयोग औषधी हेतु करते हैं।

लाणा की सूखी लकड़ियां ईंधन के रूप में भी उपयोग की जाती हैं माना जाता है कि यह कम धुआँ व अधिक ताप देती है।

पारिस्थितिक महत्व एवम् संरक्षण

इस झाड़ी के बहुशाखीय, अधिक फैलाव तथा गहरे जड़ तंत्र के कारण अति शुष्क क्षेत्रों के लिए एक आदर्श प्रजाति है जो मृदा का अपरदन नहीं होने देती व तेज हवा के दौरान मृदा का संरक्षण करती है। इसके प्राकृतिक क्षेत्रों के स्वस्थाने संरक्षण की आवश्यकता है।

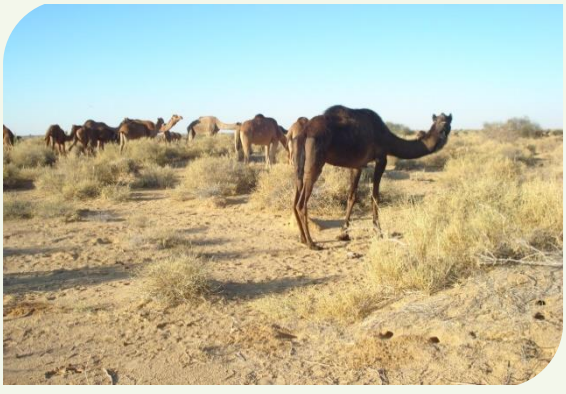

मरूस्थलीकरण नियंत्रण पर्यावरण सूचना प्रणाली केन्द्र
भाकृअनुप–केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान, जोधपुर - 342003